परमपूज्य गुरुदेव की शतनामावली

१. मदन मोहन मालवीय द्वारा गायत्री मंत्र दीक्षित को नमस्कार।

२. जन्म-जन्मान्तर के संबन्धों को जानने वाले सर्वज्ञ को नमस्कार।

५. काल को जीतने वाले महाकाल को नमस्कार।

६. गुरुसत्ता को सम्पूर्ण समर्पण करने वाले, श्रद्धेय को नमस्कार।

७. गुरुओं को खोजने की जरूरत नहीं है, वे स्वयं आकर मार्गदर्शन करेंगे, इस रहस्योद्घाटन करने वाले, शिष्यसुलभ को नमस्कार।

८. गुरु के प्रथम दर्शन में ही गुरु द्वारा अति तीव्र साधनाएँ प्राप्त करने वाले तितीक्षक को नमस्कार।

९. प्रथम हिमालय यात्रा में स्थूल जगत को वश में करने वाले भूपति को नमस्कार।

१०. पूज्य गुरुदेव के बुलावे का निरीक्षण करते हुए ही, जिम्मेदारियों को सतत निभाने वाले ; विख्यात को नमस्कार।

११. सूक्ष्म शरीर में रहते हुए ही सूक्ष्म जगत के क्रियाकलापों को आसानी से करने की सामर्थ्य रखने वाले, त्रिलोकात्मक को नमस्कार।

१२. अखण्ड दीप सम्मुख में, चौबीस वर्ष के चौबीस गायत्री महामंत्र महापुरश्चरण करने वाले, विश्वामित्र-प्रियाय को नमस्कार।

१३. अखण्ड दीप स्थापक को अखण्ड नमस्कार।

१४. स्वतन्त्रता प्राप्ति तक काँग्रेस कार्यकर्ता एवं स्वयं सेवक

बनकर समर्पण से काम करनेवाले, संग्राम सेनानी को नमस्कार।

१५. योगाभ्यास का अर्ध नित्य कर्मों को उदात्त भाव से करना ही है, ऐसी प्रेरणादायक को नमस्कार।

१६. हिमालय के नंदनवन में पूर्णिमा के रात को गुरुदेव का साक्षात्कार को प्राप्त करने वाले, अद्धितीय को नमस्कार।

१७. हिमालय की गुफाओं में ऋषियों का साक्षात्कार प्राप्त, महर्षि को नमस्कार।

१८. अपने गुरुदेव के साथ आकाशगमन कर सकने वाले, आकाशचारी को नमस्कार।

१९. निरंतर स्वाध्याय में लीन रहने वाले सच्चिदानन्द को नमस्कार।

२०. समस्त आर्श ग्रंथों का समर्थन करने वाले, वेदात्मक को नमस्कार।

२१. उनके द्वारा देव संस्कृति को दृढ़ता प्रदान कर एक विश्वसंस्कृति का मार्ग प्रशस्त करने वाले, युग संस्कर्ता को नमस्कार।

२२. स्वाध्याय, सत्संग, मनन, ध्यान आदि द्वारा दस इन्द्रियों और ग्यारहवें मन को नियंत्रित कर, आत्म संयमन द्वारा दिव्यानुभूति प्राप्त करनेवाले, महेन्द्र को नमस्कार।

२३. गंगोत्री के पास गौरीकुण्ड भगीरथ शिला पर बैठकर, एक वर्ष तपःध्यान करने वाले, तपोनिधि को नमस्कार।

२४. पात्रता अभिवृद्धि किये बिना सूक्ष्म शरीरधारी दिव्यात्माओं

का दर्शन पाना असंभव है - ऐसे ज्ञान प्रदाता को नमस्कार।

२५. देवता और मानवों के बीच वारधिरुप, हिमालय की उपासना करने वाले, हिमालयोपासक को नमस्कार।

२६. निरंतर गुरुसत्ता के सान्निध्य का अनुभव करने वाले, गुरुस्पर्षित को नमस्कार।

२७. गुरुसत्ता में व्यक्तिगतसत्ता को पूरी तरह सम्मिलित करने वाले अखण्ड़सत्ता को नमस्कार।

२८. गुरुसत्ता सन्देश वाहक के साथ चलने वाले, सुदर्शक को नमस्कार।

२९. मौन भाषा में गुरु अनुग्रह को पाने वाले, महा मुनि को नमस्कार।

३०. हिमालय में ऋषियों के सिद्धक्षेत्रों का दर्शन करने वाले, सिद्धपुरुष को नमस्कार।

३१. ऋषियों की आवेदना बाँट सकने वाले, दयासागर को नमस्कार।

३२. ऋषियों से आपके समस्त कार्यक्रमों का बीजारोपण मैं करूँगा - ऐसी अनुमति ऋषियों से लेने की प्रेरणा देनेवाले गुरु के, शिष्योत्तम को नमस्कार।

३३. मथुरा में आयोजित सहस्त्रकुण्डीय गायत्री यज्ञ में ऋषियों को सूक्ष्म शरीर में आने का आह्वान, दादा गुरुदेव द्वारा भेजने वाले, महान आत्मा को नमस्कार।

३४. भावी कार्यक्रमों का सम्पूर्ण दर्शन करने वाले, युगद्रष्टा को नमस्कार।

३५. मथुरा में गायत्री संस्थान के स्थापक को नमस्कार।

३६. तीन मंजिल, पन्द्रह कमरों के भूत बंगले में नूतन संस्था की स्थापना करने वाले, भूतेन्द्रियात्मक को नमस्कार।

३७. भूतों से - ऊपर के सात कमरों में आप रहिए, नीचे के आठ कमरों में हम रहेंगे, आपको तकलीफ भी नहीं, हमें कष्ट भी नहीं - ऐसा कहकर भूतों को राजी करने वाले , अभय प्रदाता को नमस्कार।

३८. अखण्ड ज्योति मास पत्रिका के प्रकाशन को शुरु करने वाले युगारंभक को नमस्कार।

३९. अपने मानवीय सत्ता रुपी कठपुतली की बागड़ोर को गुरु सत्ता को सौंपने वाले, सूत्रात्मक को नमस्कार।

४०. चारों वेदों के अनुवाद करने वाले, वेदात्मक को नमस्कार।

४१. १०८ उपनिषदों के अनुवादक, ओंकारेश्वर को नमस्कार।

४२. षट्दर्शन के अनुवादक, सुदर्शन को नमस्कार।

४३. समस्त आर्श ग्रंथों के अनुवादक, पज्ञावतार को नमस्कार।

४४. धर्म और आर्श साहित्य पर आधारित हजारों शिक्षणोपयोगी पुस्तकें लिखने वाले, सरस्वतीपुत्र को नमस्कार।

४५. एक ही व्यक्ति के रचनाओं के संकलन को पत्रिका के रुप में प्रकाशित कर विज्ञापनों के बिना, हानि के बिना, लाखों की संख्या में पाठकों तक पहुँचाले वाले, महानिधि को नमस्कार।

४६. मथुरा में होने वाले अनेक रहस्यमय प्रसंगों के, प्रत्यक्ष साक्षी को नमस्कार।

४७. विचार क्रान्ति अभियान के प्रारम्भ करने वाले, विश्वकर्मा को नमस्कार।

४८. विचार क्रान्ति अभियान द्वारा मनुज में देवत्व अवतरण तथ्य है - इस, सत्य धर्म परायण को नमस्कार।

४९. पृथ्वी पर स्वर्गावतरण एक तथ्य है - इस सच्चाई को दर्शाने वाले स्वर्गाधिपति को नमस्कार।

५०. गायत्री यज्ञ विधान को दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन के लिए ब्रह्मास्त्र बनाकर उपयोग करने वाले, श्रीराम को नमस्कार।

५१. गायत्री यज्ञ को जन-जन तक पहुँचाने वाले, विश्वामित्र को नमस्कार।

५२. युग निर्माण योजना के संस्थापक को नमस्कार।

५३. युग निर्माण योजना सम्मेलनों को सर्वव्यापक बनाने वाले, सर्वव्यापी की नमस्कार।

५४. व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन में जन्म जन्मान्तर के सम्बन्ध को पहचानने वाले, सर्वविदित को नमस्कार।

५५. आध्यात्मिक उन्नति के लिए पंचकोश साधना शिविर के निवर्तक, पंचकोषाधीश को नमस्कार।

५६. स्वास्थ्य के लिए कायाकल्प शिविर चलाने वाले भास्कर को नमस्कार।

५७. संस्था के विस्तार के लिए जीवन साधना शिविर के शुभारंभ करनेवाले, जगतप्रभु को नमस्कार।

५८. आध्यात्मिकता को तर्कसंगत हेतुवादी विज्ञान में रूपांतरण

करने वाले, वैज्ञानिक को नमस्कार।

५९. माता भगवती देवी को सम्पूर्ण कार्य निर्वाहित करने की शक्ति देने वाले, विश्व परिपालक को नमस्कार।

६०. समस्त ऋषि परंपराओं का बीजारोपण करनेवाले सबीजप्रदाय को नमस्कार।

६१. सप्त सरोवर के पास गायत्री मंत्र द्रष्टा विश्वमित्र ऋषि के तपोस्थली में शांति कुंज निर्माणकर्ता, कल्पवृक्ष स्थापक को नमस्कार।

६२. शांतिकुंज भूमि में प्रसुप्त संस्कारों को जागृत करने के लिए चौबीस, चौबीस लाख पुरश्चरण करने वाले, ऋषियुग्म को नमस्कार।

६३. प्राणपत्यावर्तन शिविर के संचालक, प्राणनाथ को नमस्कार।

६४. युगशिल्पी साधना शिविर के निर्वाहक, विश्वकर्मा को नमस्कार।

६५. वानप्रस्थ शिविर चलाने वाले, युगशिल्पी को नमस्कार।

६६. नवकुंड़ी यज्ञशाला में निरंतर दो घंटे तक यज्ञ कराने वाले, स्वाहापति को नमस्कार।

६७. शान्तिकुञ्ज में नित्य चौबीस लाख गायत्री जप करानेवाले, अखण्डजपप्रियाय को नमस्कार।

६८. ज्ञानरथ और चल-ज्ञानपीठ के आयोजक, ज्ञानाधीश को नमस्कार।

६९. गंगोत्री साधना स्थल में भगीरथ द्वारा चलाए गए कार्यक्रमों के बीजारोपक, ज्ञानगंगावतारक को नमस्कार।

७०. यमुनोत्री के पास परशुराम के तपस्याओं के बीजारोपक, सप्तमावतार को नमस्कार।

७१. केदारनाथ के चरक ऋषि परंपरा में मूलिका विज्ञान को पुनर्जीवित करने वाले, संजीवनी को नमस्कार।

७२. बदरीनाथ क्षेत्र में व्यास महर्षि के समस्त कार्यक्रमों के बीजारोपक, कृष्णद्वैपायन को नमस्कार।

७३. अलकनंदा मंदाकिनी के संगम स्थान रुद्रप्रयाग में पतञ्जलि महर्षि के योगविज्ञान के पुनर्जीवनकर्ता, राजयोग सिद्ध को नमस्कार।

७४. त्रियोगी नारायण क्षेत्र में याज्ञवल्क्य द्वारा अभिवृद्ध यज्ञविद्या के पुनरुद्धारक, स्वयमग्नि को नमस्कार।

७५. उत्तरकाशी में जमदग्नि गुरुकुल कार्यक्रम के प्राणपतिष्ठक परशुराम को नमस्कार।

७६. गुप्तकाशी में देवर्षि नारद के संगीतज्ञान को अपनाने वाले, संगीतज्ञ को नमस्कार।

७७. देवप्रयाग में वशिष्ठ के धर्म तंत्र और राज तंत्र के समन्वयक, ब्रह्ममानसपुत्र को नमस्कार।

७८. ऋषीकेश क्षेत्र में पिप्पलाद ऋषि द्वारा मन पर आहार के प्रभाव को निरुपित करने वाले, अथर्ववेदज्ञान प्रदाता को नमस्कार।

७९. सूतसौनक के ज्ञानयज्ञ परंपरा में प्रज्ञापुराण के रचयिता, अनंतज्ञानाय को नमस्कार।

८०. अथर्व वेद शोध परंपरा में कणाद ऋषि की परंपरा में

अणुविज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान के, समन्वयकर्ता को नमस्कार।

८१. बुद्ध के परिव्राजक जैसे, दिव्य संस्कृति संदेश वाहकों को प्रशिक्षित करने वाले, धर्म प्रचारकाय को नमस्कार।

८२. आर्यभट के तरह, सूर्य मण्डल में ग्रहों और भूमि के बीच प्रवाहित धाराओं का उपयोग करने में समर्थ ज्योतिर्विज्ञान अनुसंधानकर्ताओं को प्रशिक्षित करने वाले, ज्योतिर्विद को नमस्कार।

८३. सकल साधु जन साधना परंपराओंको पुनर्जीवित करने वाले, सर्वजन हिताय को नमस्कार।

८४. आदि शंकराचार्य की परंपरा में तीन हजार से भी अधिक शक्ति पीठों की स्थापना करने वाले शक्तोपासक को नमस्कार।

८५. आध्यात्मिक साधनाओं में संघर्षण और सृजनात्मकता की आवश्यकता को अग्रस्थान देने वाले, विध्यावान को नमस्कार।

८६. समस्त मानव जाति के भविष्य में सुख शांतिभरित परिस्थितियों के निर्माणकरनेवाले, भविष्य ब्रह्मा को नमस्कार।

८७. जीवन में बोओ और काटो - के आध्यात्मिक आचरण सूत्रों को प्रदान करने वाले, कर्मसिद्धांत बोधक को नमस्कार।

८८. रात में साधना, दिन में विश्वमानव की आराधना में समय और श्रम को लगाना ही शारीरिक साधना है - ऐसी शिक्षा प्रदाता, प्रपंचवनमाली को नमस्कार।

८९. बुद्धि को भगवान के क्षेत्र में बोने की पद्धति सिखाने वाले, सुयुक्तिदाता को नमस्कार।

९०. जीवन भर प्रेममय भावनाओं को पिछड़े हुए वर्गों पर निछावर करने वाले, जनकल्याणकारक को नमस्कार।

९१. पंचकोश वीरभद्र साधक, विश्वकुण्डलिनी जागरणकर्ता को नमस्कार।

९२. पृथ्वी के चारों ओर व्याप्त वायु मण्डल का परिशोधन करने वाले, जगत् उजियागर को नमस्कार।

९३. वातावरण प्रदूषण के निवारण कर्ता को नमस्कार।

९४. महाविनाश को ले जाने वाली परिस्थितियों का निवारण करने वाले, दयामृत तरंगिण्याय को नमस्कार।

९५. नवयुग निर्माता को नमस्कार।

९६. मानव में देवत्व को विकसित कर, देवमानवों के सृष्टिकर्ता को नमस्कार।

९७. उज्वल भविष्य ऋषियों के प्रयत्नों द्वारा आकर रहेगा - की उद्घोषणा करने वाले, धर्माध्यक्ष को नमस्कार।

९८. लक्ष-कुण्ड गायत्री महायज्ञ को अपने जीवन की पूर्णाहुति के रूप में समर्पण के इच्छुक, यज्ञ शिरोमणि को नमस्कार।

९९. लक्ष युगशिल्पी प्रशिक्षण की दीक्षा स्वीकार करने वाले, अनंत रूप को नमस्कार।

१००. लक्ष अशोक वृक्ष बोने का संकल्प लेने वाले, सकलजीव संरक्षक को नमस्कार।

१०१. लक्ष ग्राम तीर्थों की स्थापना की दीक्षा लेने वाले तीर्थ प्रियाय को नमस्कार।

१०२. लक्ष वर्ष के समयदान संचित करने का संकल्प करनेवाले, अनन्तकाल को नमस्कार।

१०३. शस्त्रबल का नियोजन सृजनात्मक कार्यक्रमों के लिए करनेवाले, युगसृष्टा को नमस्कार।

१०४. बुद्धिवल-संघटन बल-शस्त्रबल-धनबल के प्राप्ति की श्रृंखला को तोड़कर दैवी लक्ष्य की ओर मोड़नेवाले सुमेध को नमस्कार।

१०५. जाति लिंग वर्ण ऐश्वर्य पर आधारित मानवजाति के विभाजन को रोककर, एक धर्म का मार्ग प्रशस्त करने वाले, सकल-स्वीय-समानत को नमस्कार।

१०६. प्रच्छन्न नास्किकों पर उँगुली उठाने वाले, ब्रह्मज को नमस्कार।

१०७. सुव्यवस्थित, सुनियोजित रीति में कुतूहल, कौतुक और विचित्रता, विलक्षणता के बिना निष्ठापूर्वक आध्यात्मिकता का प्रचार करने वाले, महाबुद्धि को नमस्कार।

१०८. जन्म-जन्मों से चले आ रहे अनन्य आत्मीय सम्बन्धी परिजनों को अपने जीवन को ही वसीयत और विरासत के रुप में समर्पित करनेवाले, महाकाल को नमस्कार।

*****